भाषा शिक्षण और भाषाई खेल

कुसुमलता

बच्चों के जीवन और शिक्षा में खेलों का महत्त्व जगज़ाहिर है। कई खेल गाहे-बगाहे शुरुआती कक्षाओं के बच्चों में भाषाई कौशलों के विकास में मददगार होते हैं। प्रस्तुत लेख में कुछ ऐसे ही पारम्परिक और ईज़ाद किए खेलों के उपयोग से भाषा शिक्षण को रुचिकर, सहभागी और अर्थपूर्ण बनाने के तरीक़े सुझाए गए हैं। भाषाई खेलों के ज़रिए बच्चों में बनने वाली भाषा की समझ व कौशलों के विकास की चर्चा की गई है, यह भी बताया गया है कि भाषाई खेल कैसे बच्चों से आत्मीय रिश्ता बनाने में मदद करते हैं व उनमें कल्पनाशीलता, तर्क और उत्सुकता का भाव पैदा करते हैं। सं.

बच्चा जब पहली बार विद्यालय आता है, अपनी भाषा, अनुभव और दुनिया को देखने का अपना नज़रिया साथ लेकर आता है। यहाँ शिक्षक के लिए घर-परिवार एवं परिवेश के अनुभव संसार को विद्यालय की प्रक्रिया से जोड़ना महत्त्वपूर्ण हो जाता है। बच्चा शब्दों के अर्थ और प्रभाव को जानता है। केवल चिह्न और उससे जुड़ी ध्वनियाँ ही उसके लिए अमूर्त होती हैं। इसलिए पढ़ना सिखाने की प्रक्रिया में यह महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि बच्चों के साथ अर्थपूर्ण सामग्री से पढ़ने की प्रक्रिया आरम्भ की जाए। भाषा सीखने-सिखाने की इस प्रक्रिया के मूल में यह अवधारणा भी है कि बच्चे अपनी समझ और ज्ञान का निर्माण स्वयं करते हैं। स्वयं के अनुभवों और आवश्यकताओं से सीखने के लिए ऐसा वातावरण मिलना ज़रूरी है जहाँ वे बिना रोक-टोक के अपनी इच्छा व रुचि के अनुसार सीख सकें। सीखने-सिखाने के स्वतंत्र और दिलचस्प माहौल कक्षा में हों, इसके लिए मैंने भाषा शिक्षण में भाषाई खेलों को शामिल करने की योजना बनाई। भाषा सिखाने के लिए कौन-कौन से भाषाई खेल हो सकते हैं जो बच्चों को चुनौतीपूर्ण लगें और उन्हें इनमें मज़ा भी आए, इसपर सोचना शुरू किया। साथ ही ऐसी सामग्री भी बनाई जो उनके सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा बने। इसके कुछ उदाहरण इस लेख में दिए गए हैं।

विद्यालय में आने वाले बच्चों की पृष्ठभूमि

प्राथमिक विद्यालय अजबपुरकलां प्रथम में 132 बच्चे हैं। अधिकांश पहली पीढ़ी के विद्यार्थी हैं। कुछेक को छोड़कर सभी बच्चे झुग्गी बस्तियों में रहते हैं और निम्न आय वर्ग से आते हैं। बच्चों के माता-पिता मज़दूरी और घरेलू काम करते हैं व परिवारों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर है। ये परिवार अपनी रोज़ी-रोटी के लिए ही यहाँ पर रहते हैं। इन परिवारों को जहाँ काम मिलता है वहाँ अपना परिवार लेकर चले जाते हैं। यही कारण है कि इनके बच्चों की नियमित उपस्थिति विद्यालय में नहीं रह पाती है और इन बच्चों के घर पर भी पढ़ाई का माहौल नहीं है। विद्यालय एकमात्र जगह है जहाँ उन्हें शिक्षा के साथ-साथ अन्य सामाजिक, सांस्कृतिक आयामों से रू-ब-रू कराना आवश्यक हो जाता है। स्कूली शिक्षा का अर्थ महज़ विषयों का ज्ञान होता भी नहीं, स्कूल तो बच्चे के सर्वांगीण विकास की जगह है।



स्कूल की यह ज़िम्मेदारी हाशियाकृत समुदाय के स्कूली शिक्षा में शामिल होने वाले परिवारों की पहली पीढ़ी के बच्चों के प्रति और ज़्यादा हो जाती है। कक्षा शिक्षण के अतिरिक्त खेल की घण्टी, सुबह की सभा, प्रतिभा दिवस, मिड-डे मील सहित हर वो समय जब बच्चा स्कूल में है, हम उसे बेहतर माहौल और विविध चीज़ों को जानने समझने के अवसर देते हैं।

ऐसे ही कुछ अवसर बनाने की दिशा में, मैंने भाषा सिखाने के लिए कई खेल बच्चों के साथ किए। मैं इन खेलों के बारे में व बच्चों पर इनके असर के बारे में कुछ बातें कहूँगी।

खेल गतिविधियाँ

पर्ची का खेल

यह खेल कक्षा चार व पाँच के बच्चों के साथ करती हूँ। समझकर पढ़ने के लिए यह खेल काफ़ी उपयोगी है। इस खेल की तैयारी के लिए मैंने बहुत सारी पर्चियाँ बनाईं। पर्चियों में एक-एक वाक्य लिखा और उनके साथ विराम चिह्नों का प्रयोग किया, ताकि बच्चे विराम चिह्नों की अहमियत को समझें और उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ पढ़ सकें। यह भी इंगित करते थे कि वाक्य किस हाव-भाव के साथ पढ़कर सुनाना है। इन वाक्यों के नीचे कुछ निर्देशात्मक शब्द लिखे। जैसे एक पर्ची में लिखा कि आज तो बहुत देर हो गई, मयंक अभी तक घर नहीं लौटा। इस वाक्य के नीचे मैंने लिखा– चिन्तित / परेशान होते हुए। दूसरी पर्ची में लिखा कि माँ! कोई आया है, और इस वाक्य के नीचे लिखा– ऊँचे स्वर में। तीसरी पर्ची में लिखा कि अरे! यह चीनी किसने गिरा दी? और वाक्य के नीचे लिखा– ग़ुस्से में।

- अगले दिन कक्षा में एक छोटी-सी मटकी में वो सभी पर्चियाँ डाल दीं। खेल शुरू होने से पहले खेल के लिए बच्चों को आवश्यक निर्देश दिए। इन निर्देशों में बच्चों से कहा गया कि जिसका नाम लिया जाएगा वह दौड़कर आगे मेज़ के पास आएगा, एक पर्ची निकालेगा और दिए गए निर्देशानुसार ज़ोर से पढ़ेगा।

- शुरू में बच्चे थोड़ा झिझक रहे थे, फिर मैंने ही दो पर्चियों से खेल खेला और बच्चों को वाक्य पढ़कर सुनाए। धीरे-धीरे बच्चे आगे आकर वाक्य पढ़ने लगे। खेल शुरू हुआ और बच्चों ने अलग-अलग अन्दाज़ में पर्चियों पर लिखे वाक्य को पढ़ना शुरू किया। थोड़ी देर में ही कक्षा का वातावरण बदल गया। शुरू में बच्चों को जो झिझक हो रही थी वह ख़त्म हो गई। बच्चे रौ में आ गए और उन्हें मज़ा आने लगा।

- साधारणतया बच्चे किताब पढ़ते समय विराम चिह्नों का प्रयोग नहीं करते हैं। पढ़ते समय अधिकतर बच्चे एक साधारण-सी लय में पढ़ते चले जाते हैं। आवाज़ का उचित हाव-भाव, ठहराव, जोश, उत्तेजना, उत्साह– ये सब धाराप्रवाह पठन में बहुत आवश्यक होते हैं, ऐसा मेरा मानना है। तब पढ़कर सुनना-सुनाना बहुत आनन्द देता है। धाराप्रवाह पढ़ने की गतिविधि में ये पर्ची खेल बहुत सहायक रहा।

- इसी प्रकार, दूसरी बार भी पर्चियों को वाक्य एवं निर्देश लिखकर मोड़ दिया और सभी पर्चियाँ एक मटके में डाल दीं। निर्देशों में– हँसकर, दुखी होकर, चिढ़कर, ख़ुशी से झूमकर, आँखें तरेरकर, अनुरोध करते हुए, आज्ञा देते हुए आदि शब्द लिखे। मैं पढ़ते समय उनमें होने वाले बदलावों को अनुभव कर रही थी। बीच-बीच में बच्चे ही बच्चों की मदद कर रहे थे। इस क्रिया से कक्षा में एक जोशीला वातावरण निर्मित हो

गया और सभी को बहुत मज़ा आ रहा था। मैं भी बच्चों के साथ बराबर खेल रही थी और जो पर्ची मेरे हिस्से में आती, मैं उसी अन्दाज़ में पढ़ती।

● इस गतिविधि के बाद मैंने कहानियों को भी अलग-अलग वाक्यों में लिखकर क्रम से पर्चियाँ बनाईं। उनके पीछे क्रम से पढ़ने हेतु नम्बर भी डाल दिए, यथा– 1, 2, 3, ..., और वाक्य के भाव निर्देश रूप में नीचे लिख दिए। यह प्रयोग कुछ अलग ही था। कहानी का क्रम धीरे-धीरे बन रहा था और बच्चे सामूहिक रूप से उचित आरोह-अवरोह, लय और हाव-भाव के साथ कहानी पढ़ पा रहे थे। यह खेल कक्षा 4 में एक सप्ताह तक अलग-अलग कहानियाँ लेकर खिलवाया।

● एक सप्ताह बाद जब मैंने आकलन किया तो 20 में से 15 बच्चे शानदार तरीक़े से पढ़ पा रहे थे। पाँच बच्चे वो थे जो अधिक अनुपस्थिति आदि के कारण पढ़ना सीखने की प्रक्रिया में थे। वे बड़े शब्दों को अटककर पढ़ पा रहे थे। पर एक बात अच्छी हुई कि ये पाँच बच्चे भी उसके बाद कक्षा में नियमित तौर पर आने लगे। अब कक्षा में बाक़ी बच्चे उनके साथ बीच-बीच में पर्ची का खेल, खेल रहे होते हैं। एक माह बाद जब आकलन किया तो ये बच्चे भी बहुत अच्छी तरह पढ़ पा रहे थे।



यदि शिक्षक बच्चों के स्तर व रुचि के अनुसार पढ़ने के वाक्य व निर्देश बनाएँ तो यह भाषा खेल बहुत उपयोगी है।

इस खेल से बच्चों में सभी के सामने अपने-आप को अभिव्यक्त करने की हिचक दूर हुई, भरपूर आत्मविश्वास के साथ अपनी बात को रखने का साहस भी आया। यह भी देखने में आया कि धीरे-धीरे वे विराम चिह्नों के उचित प्रयोग के साथ-साथ उचित हाव-भाव, आरोह-अवरोह के साथ पढ़कर अपनी बात रखने लगे और सीखे गए विराम चिह्नों का उपयोग अपने लिखने में भी करने लगे।

अन्त्याक्षरी का खेल

यह सामान्य तौर पर खेला जाने वाला खेल है। जैसा कि नाम से ही पता चलता है, अन्त्याक्षरी अर्थात आख़िरी अक्षर से शुरू होने वाला खेल। यह बहुत पुराना खेल है जिसे हमने बचपन में बहुत आनन्द के साथ खेला है। इस खेल को जीतने के लिए कैसे हम फ़िल्मी गीत और कविताओं को याद करते थे, सोचते थे और कई बार स्वयं ही कल्पना करके गीत-कविता बना लेते थे। यानी हम सोच रहे होते थे और गढ़ रहे होते थे। उत्साह से भरे होते थे और ख़ूब मज़े करते थे। इसी उत्साह व आनन्द की सोच को शामिल करते हुए मैंने शिक्षण में सीखने-सिखाने के खेल के रूप में इसे शामिल करने का सोचा। इस खेल को मैंने कक्षा 3, 4 और 5 में भाषा शिक्षण में शामिल किया। इसमें एक कविताओं की अन्त्याक्षरी थी, जिससे बच्चों को बहुत-सी कविताएँ, दोहे, श्लोक आदि याद हुए और इसका परिणाम यह रहा कि बच्चे राज्यस्तरीय अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता में भी प्रतिभाग कर पाए हैं।

इसी अन्त्याक्षरी को हिन्दी भाषा के व्याकरण शिक्षण में प्रयोग किया तो परिणाम बहुत उत्साहजनक रहे। सबसे पहले संज्ञा को स्पष्ट करने के लिए अन्त्याक्षरी का सहारा लिया। पहले दिन हमने नामों की अन्त्याक्षरी खेलने का प्रस्ताव

कक्षा में रखा। नामों में भी वर्गीकरण कर दिया। पहला राउण्ड (फेरा) जानवरों (पालतू एवं जंगली) के नाम, दूसरा फेरा मनुष्यों के नाम, इसी क्रम में अगले दिन शहरों के नाम, ज़िलों के नाम, राजधानी के नाम, प्रदेशों-देशों के नाम। उसके अगले दिन नदियों, पहाड़ों और प्रसिद्ध इमारतों के नाम, इसके बाद वस्तुओं के नाम से अन्त्याक्षरी खेली। इस प्रकार, जब हमने इन सारे नामों की अन्त्याक्षरी एक सप्ताह तक प्रतिदिन क्रम से खेली तो बच्चों ने बहुत उत्साह दिखाया। एक दिन पहले ही बता दिया जाता कि कल कौन-सी अन्त्याक्षरी खेलनी है। बच्चे प्रत्येक अक्षर से वो नाम ढूँढ़कर लाने की कोशिश करते। इस क्रम में बच्चों ने देशों, राजधानियों, शहरों, गाँवों, ज़िलों आदि के नाम भी याद कर लिए। यानी यहाँ हमारा पर्यावरण विषय भी साथ-साथ चल रहा था। अब ये समझाना आसान हो रहा था कि ये जो सब नाम हैं इन्हें ही संज्ञा कहते हैं। कक्षा 4 और 5 को तो संज्ञा के भेद भी इसी खेल के माध्यम से समझ आ गए, और अब बच्चे संज्ञा सम्बन्धी प्रश्नों को भी हल कर पा रहे थे।

यह प्रक्रिया आनन्द के साथ-साथ कई कौशलों को विकसित कर रही थी। नामों की अन्त्याक्षरी के साथ-साथ विशेषण और क्रिया, आदि शब्दों की अन्त्याक्षरी भी खेली गई। बच्चे हल्के-फुल्के माहौल में न केवल नए-नए शब्द एक दूसरे से सीखते हैं, बल्कि वे ख़ुद नए शब्द गढ़ने भी लगते हैं। अलग-अलग तरह की अन्त्याक्षरी करते समय शब्दों के विभिन्न वर्गों से भी परिचित होते हैं और इस तरह भाषा के व्याकरणीय पहलुओं को भी सीख जाते हैं। हम देख सकते हैं इस खेल से बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। वे आत्मविश्वास से लबरेज़ होते हैं। रचनात्मकता, तर्क एवं कल्पनाशीलता का विकास होता है।

कहानी का खेल

एक और खेल कहानी बनाने का है जो बच्चों को धीरे-धीरे आकर्षित करने लगता है और कई तरह की क्षमताओं के विकास का मौक़ा देता है। इस खेल को मैं चौथी और पाँचवीं कक्षा के बच्चों के साथ करती हूँ। इसके पीछे कारण यह होता है कि बच्चे लिखना सीख चुके होते हैं। कहानी खेल को कई तरीक़ों से बच्चों के साथ खेलती हूँ। इसमें एक बच्चा वाक्य बनाने की प्रक्रिया में स्वयं मन से एक वाक्य बनाकर बोलता है और दूसरा बच्चा उसके आगे जोड़ता चला जाता है। यह क्रम चलता रहता है और अन्तिम बच्चे तक आते-आते एक कहानी बन जाती है। इसके बाद कक्षानुरूप बच्चों को अपने तरीक़े से अभिव्यक्त करने के लिए कहती हूँ। इस दौरान बच्चे सोचने लगते हैं कि उन्हें क्या जोड़ना है। इस प्रक्रिया में सभी बच्चों की भागीदारी हो जाती है। दूसरी प्रक्रिया में एक छोटी कहानी के वाक्यों के हिस्से कर बच्चों में बाँट देती हूँ और आपस में बातचीत कर इन हिस्सों से कहानी बनाने को कहती हूँ। बच्चे ख़ूब अच्छे-से यह काम करते हैं। तीसरी प्रक्रिया में किसी दिन बच्चों के बीच एक कहानी बोलती हूँ। आधी कहानी सुनाकर बच्चों से कहती हूँ कि कहानी तो अधूरी रह गई अब आप पूरा करो।

नए शब्दों से परिचय होने के साथ-साथ इस खेल से बच्चों में तर्क और कल्पनाशीलता का विकास होता है। बच्चों में समूह भावना से कार्य करने की आदत भी विकसित होती है।

उत्तर खोजो खेल

एक और खेल जो कुछ अलग तरह का है, यह संकेतों के आधार पर खज़ाने के रूप में उत्तर खोजने का है। यह खेल मैं कक्षा तीन के



बच्चों के साथ करती हूँ। बच्चों के समूह बनाकर प्रत्येक समूह को बच्चों की संख्या के अनुसार प्रश्न देती हूँ। इन प्रश्नों के उत्तर स्कूल में, कक्षा के अन्दर, खेल के मैदान आदि अलग-अलग जगहों पर छुपा देती हूँ। और बच्चों को इनके उत्तर खोजने को कहती हूँ।

प्रश्नों पर उत्तर के कुछ हिन्ट दे देती हूँ ताकि बच्चों को मदद मिल पाए। जो सबसे अधिक प्रश्नों के उत्तर खोजकर लाता है उसके लिए समूह तालियाँ बजाता है। इस खेल से होने वाले फ़ायदे इस प्रकार हैं :

1. बच्चों की खोज प्रवृत्ति बढ़ती है।

2. पाठ पढ़ाने के बाद प्रश्न सीधे न करके ऐसे पूछने से वो नीरस प्रक्रिया को सरस रूप में लेते हैं।

3. प्रश्नों के साथ दिए गए हिन्ट भी बच्चे के विकास में सहायक होते हैं जैसे– कक्षा से उत्तर दिशा की तरफ़ 12 क़दम सीधे बढ़ो, फिर 3 क़दम बाएँ और उत्तर ढूँढ़ो। इस प्रक्रिया में दिशाएँ, दायाँ एवं बायाँ और क़दमों का गिनना शामिल हैं जिनसे बच्चे वाक़िफ़ होते हैं।

4. कुछ बच्चों के जोड़े बनाए जाते हैं और वे एक दूसरे से सलाह मशविरा करते हुए उत्तर की खोज करते हैं।

5. चूँकि बच्चे एक प्रक्रिया के तहत रुचिपूर्ण ढंग से पाठ पढ़ने के बाद पहले प्रश्न को समझते हैं फिर उसके उत्तर को खोजते हैं, तो प्रश्न और उत्तर दोनों से उनकी दोस्ती हो जाती है। सीखने की इस प्रक्रिया में सीखने का आनन्द सुरक्षित रहता है।

ज़ाहिर है कि यह खेल निर्देश समझने व उनके अनुसार कार्य करने की राह में मददगार होता है। कक्षा की स्थिति के अनुसार निर्देशों में दिशा एवं अन्य पहलू जोड़ सकते हैं जिससे बच्चे उन धारणाओं से अन्तःक्रिया कर सकें।

लूडो खेल

हमारे (मेरे व बच्चों के) लिए आकलन अकसर बोरिंग व थकाने वाला काम हो जाता है। इसलिए कभी-कभी आकलन के लिए मैं लूडो खेलती हूँ।

इस खेल को मैं कक्षा पाँच के साथ खेलती हूँ। वैसे यह खेल किसी भी कक्षा के बच्चों के साथ किसी भी विषय के प्रश्नों के साथ खेला जा सकता है। इसमें गत्तों के टुकड़ों की मदद से लूडो बनाती हूँ। इनमें पाठ से सम्बन्धित और व्याकरणीय सम्बोध के प्रश्न भी होते हैं। इस खेल को बच्चे समूह में खेलते हैं। मैं अधिकतम आठ बच्चों को एक बार में शामिल करती हूँ। एक साइड में दो-दो बच्चे रहते हैं और खेल में जवाब ढूँढ़ने में एक दूसरे की मदद भी करते हैं। जीतने के लिए घर से तैयारी करके आते हैं। डायस में 6 आने पर गोटी खुलती है और डायस पर जितनी गिनती आती है उतने अंक आगे बढ़ने से पहले डिब्बे से पर्चा निकालकर लिखे प्रश्न का जवाब देना होता है। जवाब सही होने पर ही आगे बढ़ना होता है। अगर वह बच्चा जवाब नहीं दे पाता तो साथ का बच्चा उसका उत्तर बताता है। चारों साइड पर चार प्रश्न बैंक होते हैं और प्रश्नों की पर्ची पर नम्बर लिखे होते हैं। हर बार डायस में जो नम्बर आता है उसपर बढ़ने से पहले एक पर्ची निकालकर उसका जवाब सबको बताना होता है। प्रश्न का उत्तर न आने पर चाल दूसरे को देनी होती है, इस प्रकार खेल चलता रहता है। जो जितने ज़्यादा प्रश्नों के उत्तर देता है वही विजेता होता है। प्रश्न बैंक के साथ-साथ उत्तर बैंक भी होता है जिसका प्रयोग बच्चे खेल समाप्त होने के बाद करते हैं। अपने प्रश्नों के उत्तर का मिलान करते हैं। अगले दिन उन प्रश्नों के उत्तरों की तैयारी करके आते हैं। जहाँ बच्चों को समझने में परेशानी होती है, वे मेरे पास आते हैं। इन प्रश्नों के साथ यह शर्त जुड़ी होती है कि बताओ और बढ़ो, नहीं तो वहीं रुको। प्रश्नों के रूप इस प्रकार होते हैं :

- रेल के पाँच तुकान्त शब्द;
- उजाला का विलोम शब्द;
- जल के दो पर्यायवाची;
- राधा जलेबी खाती है, में क्रिया शब्द;
- राजा का घोड़ा बहुत तेज़ दौड़ता है, में विशेषण;
- राजन को क्या हुआ? में प्रश्नवाचक शब्द;
- मामा का स्त्रीलिंग शब्द;
- पाठ के प्रश्न; आदि

जितने समूह खेलते हैं उतने ही प्रश्न बैंक बनाते हैं। बच्चे भी प्रश्न तैयार करने में मदद करते हैं। खेल पूरा होने के बाद हम कक्षा में कठिन उत्तरों पर चर्चा करते हैं। इस खेल से बच्चों के सीखने में प्रतिफलों का आकलन करने में भी मदद मिलती है।

खेल गतिविधियों के बाद बच्चों के साथ जो भी बातचीत होती है, उसको ध्यान से सुनते हैं और अपनी प्रतिक्रिया बेझिझक व्यक्त करते हैं। सुनी हुई रचनाओं, घटनाओं की विषय वस्तु, पात्रों, शीर्षक आदि के बारे में बातचीत करते हैं, राय बनाते हैं और अपने तरीक़े से भाषा को बुनते हैं। नए-नए शब्दों के सन्दर्भ को समझकर, उनका अर्थ सुनिश्चित कर अपनी भाषा में लिख पाने में सक्षम हो पाते हैं।

मैंने सीखा

भाषा की खेल गतिविधियों से बच्चों के साथ मेरे सम्बन्धों में भी बहुत आत्मीयता आ गई व कक्षाएँ मज़ेदार बन गईं। बच्चों की सीखने की इच्छा बनी व उनमें आत्मविश्वास आया। मुझे लगता है कि बात सिर्फ़ इन्हीं गतिविधियों की नहीं है। ऐसी ही बहुत-सी दूसरी गतिविधियाँ और दिमाग़ी खेल भी कक्षा में किए जा सकते हैं। इस अनुभव के बाद मेरा यह विश्वास पक्का हुआ है कि बच्चे गतिविधि-आधारित प्रक्रियाओं में रुचि लेते हैं और सीखने हेतु रोचक माहौल बनता है। इसके साथ ही यहाँ कुछ और महत्त्वपूर्ण बिन्दु हैं :

- भय रहित माहौल में बच्चे जल्दी और अधिक सीखते हैं एवं अपनी बात नि:संकोच अध्यापक के समक्ष रखते हैं। सीखने की प्रक्रिया में बच्चों से दोस्ती करना बहुत सहायक होता है।

- स्वयं करके सीखने के अवसर प्रदान करने पर वे स्थाई रूप से सीखते हैं।

- जब बच्चे सीख नहीं पाते हैं तो शिक्षक / शिक्षिका को अपना तरीक़ा बदलकर नया तरीक़ा अपनाना चाहिए।

- बच्चों के मन में बहुत सारी बातें चल रही होती हैं। जब उनके साथ नियमित संवाद अपनेपन से होता है तो वे शिक्षक से अपनी क़रीबी अनुभव करते हैं।

ऐसा करने के लिए कई बातों का ध्यान रखना पड़ता है। उदाहरण के लिए, मेरी कोशिश रहती है कि सप्ताह में एक दिन बच्चों के साथ केवल उनकी बातें सुनने, उनको समझने, उनके सीखने को आसान करते हुए ग़लत-सही की पहचान कर निर्णय ले पाने पर केन्द्रित करूँ।

दूसरा यह कि सीखने के लिए उत्साहपूर्ण व उन्मुक्त माहौल तभी बन पाएगा जब ऐसी प्रक्रिया नियमित हो। जब बच्चों के साथ ये गतिविधियाँ नियमित रूप से की जाती हों, तभी हम देख पाएँगे कि बच्चे स्वतः सीखना शुरू कर देते हैं और किसी भी विषय में सीखने के अपने अनुभवों का उपयोग कर पाते हैं साथ ही दूसरे बच्चों को सहयोग भी कर पाते हैं।

कुसुमलता राजकीय प्राथमिक विद्यालय अजबपुरकलां प्रथम, विकासखण्ड रायपुर, देहरादून में प्रधानाध्यापक हैं। आपने बीटीसी, बीएड किया है। आपको बचपन से ही कुछ नया करने का शौक़ रहा है। बच्चों के साथ काम करते-करते यह कब उनका जुनून बन गया पता ही नहीं चला। उनकी रुचि नृत्य, गायन और खेल में भी है।

सम्पर्क : rajrajtajtaj@gmail.com